**Sixteenth Loksabha**

an>

Title: Need to include 'Alha Khand'- epic poetic works in Hindi in UNESCO's Intangible Cultural Heritage.

**कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर):** यूनेस्को के तहत अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए समिति ने दक्षिण कोरिया के जेजू में आयोजित अपने 12वें सत्र के दौरान मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में 'कुंभ मेला' का उल्लेख किया है। इससे पहले 2016 में 'योग' और पारसी त्यौहार 'नोरोज' को इस सूची में शामिल किया गया था। कुंभ मेले को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रुप में स्वीकृति मिलने पर मैं पूरे भारतवर्ष को बधाई देना चाहता हूँ। इसी क्रम में मैं सरकार का ध्यान लोक महाकाव्य "आल्हा खंड" की तरफ आकृष्ट करना चाहूंगा जो विश्व में संभवतः एकमात्र खंड काव्य है जो अभी भी मौखिक रुप से जीवित है और लगभग 100 वर्षों से बुंदेलखण्ड सहित देश के विभिन्न भागों में मुख्य रुप से हिंदी भाषी क्षेत्रों में गाया जाता है। यह अपने इतिहास और स्मृति तथा समुदाय की धारणा से जुड़ा हुआ है।

मुख्य रुप से यह बुंदेली और अवधी भाषा का छन्दबद्ध काव्य है। आल्हा का मूल छन्द कहरवा ताल में होता है जो प्रारंभ में विलंबित लय मे होता है पर लय धीरे-धीरे तेज होने लगती है और गायक और श्रोताओं में जो जोश का संचार होता है वह अभूतपूर्व होता है। आल्हा में गुरु शिष्य परंपरा का पालन किया जाता है और मौखिक रुप से यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपी जाती है। आल्हा गायन में सभी समुदाय के लोग भाग लेते हैं और गायन के समय ऊंच-नीच किसी भी तरह का भाव नहीं होता है। यह तत्व मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार के साथ संगत है क्योंकि किसी भी भेदभाव के बिना, सभी तरह के लोग समान उत्साह के साथ इसमें भाग लेते हैं। यद्यपि आल्हा में विभिन्न लोक गाथा के रुप में विभिन्न लड़ाइयों का उल्लेख है परंतु यह देशभक्ति, बलिदान और शांति का ही संदेश देता है। एक लोक खंड काव्य के रुप में, आल्हा गायन दर्शाता है कि देशभक्ति, बलिदान, सहिष्णुता और सम्मिलन समकालीन दुनिया के लिए विशेष रुप से महत्वपूर्ण है।

अतः मैं भारत सरकार से यह करबद्ध निवेदन करता हूँ कि यूनेस्को के तहत "आल्हा खंड" लोक महाकाव्य को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रुप में शामिल कराने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएं।